Vol. 10, Issue: 6, June: 2022
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

नेतृत्व कला मेरी दृष्टि में

डा. के.सी.गौड़
पूर्व अध्यक्ष (शिक्षा विभाग)
डी.पी.बी.एस. (पी.जी.) कालेज
अनूपशहर– 203390, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

डा. सुनीता गौड
अध्यक्ष (शिक्षा विभाग)
डी.पी.बी.एस. पी.जी. कालेज
अनूपशहर– 203390, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

सारांश

प्रत्येक संस्था या प्रबन्ध तन्त्र में कर्मचारियों को कार्य हेतु अभिप्रेरित करने के लिए जिन साधनों को प्रयुक्त किया जाता है। उनमें नेतृत्व एक प्रमुख साधन एवं तकनीक है। प्रबन्ध कार्य में नेतृत्व का एक विशेष महत्व होता है। किसी भी संस्था या प्रबन्ध तन्त्र की सफलता या असफलता काफी सीमा तक नेतृत्व की शैली एवं आयाम पर निर्भर होती है। यदि नेतृत्व प्रभावी ढंग से किया जाता है तो निष्चित रूप से सफलता मिलती है और यदि साधन सुविधाएँ उपलब्ध हों, किन्तु नेतृत्व दुर्बल एवं अकुशल होता है तो असफलता ही हाथ लगती है।

मुख्य शब्दः*प्रबन्ध तन्त्र, अभिप्रेरणा, अनुगामी, अनुयायियों, नेतृत्व*

1.प्रस्तावना

'एकता में शक्ति होती है।' किसी संगठन एवं उपक्रम से सम्बन्धित अनेकों व्यक्तियों के समूहों द्वारा किसी कार्यक्रम को सही दिशा में संचालित करने अथवा सुचारू रूप से क्रियान्वित होने के लिए एक ऐसे समूह के वांछित **'उद्देश्यों की प्राप्ति'** की दिशा में सामूहिक प्रयत्नों एवं मनोवृत्तियों को निर्देशित करता हो। वह प्रबन्ध या उपक्रम के व्यक्तियों के कार्यों तथा मानवीय सम्बन्धों पर विशेष ध्यान देता हो, वह अपने द्वारा संजोयी हुई अनुशासित पक्ति से सम्पूर्ण प्रबन्ध, उपक्रम अथवा इकाई को किसी लक्ष्य, की दिशा में अनवरत गतिशील बनाए रखता हो। ऐसा व्यक्ति एक 'नेता' के रूप में सदैव अपनी भूमिका अदा करता है। अर्थात वह अन्य व्यक्तियों, उनकी क्रियाओं का संगठित प्रयास में मार्ग–दर्शन करता है। अतः नेता में अनुयायियों को उसकी इच्छानुसार क्रियाएँ करने की योग्यता ही नेतृत्व कहलाती है।

2.नेतृत्व का अर्थ एवं परिभाषा

नेतृत्व शब्द से तात्पर्य किसी व्यक्ति के ऐसे गुणों से है, जिसके द्वारा वह समूह के उद्देश्यों एवं प्रयत्नों को एकता प्रदान करता है, अधीनस्थ कर्मचारियों एवं सदस्यों को प्रेरणा देता है तथा उनका सफल मार्गदर्शन करता है। दूसरे शब्दों में, नेतृत्व वह क्षमता है, जिसके माध्यम से नेता, अनुयायियों के एक समूह द्वारा वांछित कार्य बिना किसी दबाव से स्वेच्छापूर्वक सम्पन्न करवाता है। इस प्रकार नेतृत्व का अर्थ एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्तियों की क्रियाओं का इस प्रकार निर्देशन करना होता है कि संगठन के निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति आसानी से हो जाये। नेतृत्व कला का एक महत्वपूर्ण पहलू (Aspect) है।

नेतृत्व का अर्थ समझने के लिए नेता (Leader) का अर्थ समझना आवश्यक है। संस्कृत भाषा में नेता का अर्थ है 'नीयते यः अनेन' अर्थात् जो दूसरों को ले जाने की क्षमता रखता हो। अंग्रजी भाषा में 'नेता' 'Leader' शब्द का पर्याय माना जाता है। लीडर 'Leader' का अर्थ है– 'One who leads' (आगे ले जाने वाला) अथवा मार्गदर्शक। 'नेता' अथवा लीडर वही व्यक्ति होता है; जो अगुवा होने की क्षमता रखता हो। नेता का व्यवहार ही नेतृत्व होता है।

इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ पाश्चात्य विद्वानों के विचार जानना आवश्यक है–

- जेम्स, जैक्सन तथा स्पेन्सर के अनुसार– "नेतृत्व एक प्रक्रिया या कार्य है जो एक संगठित समूह की गतिविधियों को प्रभावित करता है तथा जिसका प्रयास उद्देश्य निर्धारित तथा उद्देश्य प्राप्ति के लिए होता है।"

- कून्टज एवं ओ.डोनेल के अनुसार– "किसी लक्ष्य प्राप्ति हेतु सन्देशवाहक के माध्यम से व्यक्तियों को प्रभावित कर सकने की योग्यता नेतृत्व कहलाती है।"
- अल्फर्ड तथा बैढी के अनुसार–"नेतृत्व वह गुण है जिसके द्वारा अनुयायियों के एक समूह से वांछित कार्य स्वेच्छापूर्वक बिना किसी दबाव के कराये जाते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह कह सकते हैं कि नेतृत्व अधीनस्थ कर्मचारियों को सहकारी प्रयत्नों में अधिकतम योगदान के लिए अभिप्रेरित करने की प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में नेतृत्व एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्तियों की क्रियाओं को उपलब्ध परिस्थितियों में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित एवं मार्गदर्शन करने की प्रक्रिया है।

3.शैक्षिक नेतृत्व की आवश्यकता एवं महत्व

उत्तम एवं कुशल शैक्षिक नेतृत्व विद्यालय प्रबन्ध एवं प्रशासन की प्रथम आवश्यकता होती है। शैक्षिक नेतृत्व संभालने में व्यक्ति की प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है और 'नेता' को एक आत्मिक सन्तोष एवं सुख की अनुभूति होती है। शैक्षिक क्षेत्र में तथा विद्यालयों में अधिकारीगण नेतृत्व कार्य का निर्वाह करते हैं। 'शैक्षिक नेतृत्व' नेताओं की यशवृद्धि, सम्मान, भावना, लोकप्रियता, आत्मसन्तुष्टि तथा गौरव की अनुभूति में पूर्णरूपेण सहायक होता है। इसके अतिरिक्त शैक्षिक नेतृत्व विद्यालय, महाविद्यालय की चहुंमुखी उन्नति तथा समाज की उन्नति के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि समाज में उचित शिक्षा के लिए मार्गदर्शन शैक्षिक नेतृत्व द्वारा ही किया जाता है।
नेतृत्व के आवश्यकता एवं महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं की सहायता से समझ सकते हैं:–

- समन्वय की भावना का विकास।
- व्यक्तित्व का विकास।
- प्रभाव शक्ति का विकास।
- अभिप्रेरणा की आधारशिला।
- अधिकारी वर्ग को सुविधा।
- संगठनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति।
- कर्मचारी/अध्यापक संतुष्टि।
- परिवर्तन शक्ति।

4.नेतृत्व की विशेषताएँ

नेतृत्व की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

- नेतृत्व एक गतिशील प्रक्रिया।
- क्रियाशील सम्बन्ध।
- आदर्शपूर्ण आचरण।
- अनुयायियों का होना।

5.नेतृत्व के सिद्धान्त (Principles of Leadership)

नेतृत्व को प्रभावी बनाने की दृष्टि से कूण्ट्ज एवं ओ 'डोनेल' (Koontz and O 'Donnell') ने निम्नलिखित सिद्धान्त प्रस्तुत किए जो इस प्रकार हैं:–

- नेतृत्व गुण का सिद्धान्त।
- उत्प्रेरण का सिद्धान्त।
- प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण का सिद्धान्त।
- उद्देश्यों की सामंजस्यता का सिद्धान्त।
- निर्देशन एवं नेतृत्व का सिद्धान्त।

6.शैक्षिक नेतृत्व का अर्थ एवं परिभाषाएँ(Meaning & Definition of Educational Leadership) प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार समाज के अन्य क्षेत्रों में नेतृत्व शक्ति की महत्ता को सभी स्वीकार करते हैं, उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक नेतृत्व की आवश्यकता होती है। शैक्षिक नेतृत्व के द्वारा नीतियों, विधियों एवं योजनाओं का निर्धारण किया जाता है। शैक्षिक प्रशासन के क्षेत्र में किसी विशिष्ट व्यक्ति या सहकर्मियों के हृदय को जीतने वाला व्यवहार जो वैयक्तिक तथा अर्जित गुणों पर आधारित होता है, 'शैक्षिक नेतृत्व' कहा जा सकता है। इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों के विचार जानना आवश्यक है जो इस प्रकार हैं–

मुने तथा रैले के अनुसार शैक्षिक प्रक्रिया के समय अधिकारी वर्ग जो स्वरूप ग्रहण करता है, उसी को शैक्षिक नेतृत्व कहते हैं।"

लिविंग्सटन के अनुसार शैक्षिक नेतृत्व अन्य व्यक्तियों में किसी सामान्य उद्देश्य का अनुसरण करने की इच्छा को जागृत करने की योग्यता है।"

इस प्रकार उपर्युक्त विभिन्न विद्वानों के विचारों के आधार पर कहा जा सकता है कि शैक्षिक नेतृत्व का तात्पर्य उस प्रक्रिया सम्बन्धी व्यवहारों से है, जो शैक्षिक समूह तथा विद्यालय संगठन की प्रगति के लिए मार्गदर्शक का कार्य करें तथा अपने व्यवहारों से दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम हो।

7.प्रभावशाली शैक्षिक नेतृत्व के कार्य(Functions of Effective Leadership)

प्रभावशाली शैक्षिक नेतृत्व विद्यालय/महाविद्यालय की एक प्रमुख शक्ति मानी जाती है, जिसके अन्तर्गत शैक्षिक क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के कार्यों को सम्पन्न किया जाता है। ये कार्य निम्नलिखित हैं:–

- योजना का निर्माण।
- शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण करना।
- शैक्षिक साधनों में समन्वय लाना।
- नैतिक कार्यों को प्रोत्साहित करना।
- शैक्षिक संगठनों का प्रतिनिधित्व करना।

8.प्रभावशाली शैक्षिक नेतृत्व के गुण (Qualities of Effective Educational Leadership)

शिक्षण संस्थाओं तथा शिक्षा विभागों का दक्षतापूर्वक संचालन करने के लिए योग्य शैक्षिक नेतृत्व की आवश्यकता होती है। एक अच्छे प्रभावशाली नेतृत्व में निम्नलिखित गुणों का होना आवष्यक है:–

- प्रभावशाली व्यक्तित्व।
- कुशाग्र बुद्धि।
- आदर्श चरित्र एवं जीवन शक्ति।
- उत्तरदायित्व की भावना।
- आत्मविश्वास।

9.शैक्षिक नेतृत्व सम्बन्धी बाधाएं(Barriers Related to Educational Leadership)

शैक्षिक नेतृत्व का वर्तमान परिस्थितियों में विचार करें तो प्रभावशीलता में कमी दिखाई पड़ती है। सम्भवतः इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:–

1. उच्च स्तरीय योजना निर्माण में विद्यालय प्रशासकों की भागीदारी न होना।
2. बी.एड. के पाठ्यक्रम निर्माण में विश्वविद्यालय द्वारा सम्बन्धित महाविद्यालयों के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्षों या बी.एड. महाविद्यालय के प्राचार्यों को सम्मिलित न किया जाना।
3. विश्वविद्यालय या शासन द्वारा उच्च शिक्षा से सम्बन्धित नीति–निर्धारण में विषय विशेषज्ञ एवं अनुभवी विभागाध्यक्षों को राय व मशविरा हेतु सम्मिलित न किया जाना।
4. शिक्षा सम्बन्धी नियमों व कानूनों की अस्पष्टता। शिक्षा–विभाग के कार्यालयों में नौकरशाही प्रवृत्तियों का व्याप्त होना।

5. वित्त की कमी व संसाधनों का अभाव।
6. विद्यालयों/महाविद्यालयों में शिक्षक–छात्र अनुपात में असन्तुलन शिक्षकों के रिक्त पदों पर स्थायी नियुक्तियों का न होना।

10. निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक विशेष जनसमूह को अपनी विशेष धारा में ले जाने की क्षमता को नेतृत्व क्षमता कहते हैं। नेतृत्व शब्द किसी व्यक्ति के उन गुणों को दर्शाता है जिससे किन्हीं उद्देश्यों में एकत्व भाव जागृत होता है। नेतृत्व के गुणों के माध्यम से अनुयायी नेता की इच्छानुसार ही कार्य करते हैं। नेतृत्व में गजब परिवर्तन की शक्ति होती है।

शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक नेतृत्व विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर सकता है जैसा कि पूर्व में निहित है। यथा– व्यक्तित्व का विकास करना, अभिप्रेरण की आधारशिला, सामूहिक क्रियाओं का सफलतापूर्ण संचालन, अपनत्व की भावना का विकास इत्यादि। प्रभावशाली शैक्षिक नेतृत्व शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान सरलता से कर सकता है। नेतृत्व ही वह गुण जिसके द्वारा अनुयायियों के एक समूह से इच्छानुसार कार्य लिया जा सकता है। यह व्यक्ति की अदम्य आन्तरिक शक्ति है।

है अदम्य यह शक्ति निहित,
जो करती है पूरा संचालन।
एक बड़ी जनता में रखती,
है पूरा सहर्ष अनुशासन।।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाठक, पी.डी. 2012. भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 28/115 ज्योति ब्लॉक संजय प्लेस, आगरा–2
2. गौड़, डा. के.सी. एवं अन्य शैक्षिक प्रबन्ध एवं विद्यालय संगठन, अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन 50, प्रताप नगर–द्वितीय टोंक फाटक, जयपुर, राजस्थान।
3. शर्मा, जी. आर. 2007 शैक्षिक तकनीकी के तत्व एवं प्रबन्धन, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ–250001।
4. पारीक, ओम प्रकाश. कुल श्रेष्ठ अरूण कुमार 2002. शैक्षिक प्रबन्ध एवं शिक्षा की समस्याएँ, अनन्त पब्लिकेशन्स 213, राधा दामोदर की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर, राजस्थान।